IOSR Journal Of Humanities And Social Science (IOSR-JHSS)
Volume 25, Issue 8, Series 1 (August, 2020) 66-69
e-ISSN: 2279-0837, p-ISSN: 2279-0845.
www.iosrjournals.org

मुगल कालीन भारतीय शिक्षा

अभिषेक आर्ष, असिस्टेंट प्रोफेसर
मध्यकालीन एवं आधुनिक इतिहास
कमला देवी बाजोरिया डिग्री कालेज,
दुबहर, बलिया

सारांश– भारत में मुगलों के आगमन के उपरान्त शिक्षा व्यवस्था में व्यापक परिवर्तन होता है लेकिन यह शिक्षा व्वस्था सल्तनतकालीन शिक्षा के निरंतरता के रूप में रही। इसके पूर्व जो शिक्षा हिन्दू धर्म पर आधारित थी उसे परिवर्तित करके इसमें पूर्णतया मुस्लिम धर्म पर आधारित शिक्षा के परिवेश को समाहित किया गया। जिसके फलस्वरुप मुगल काल में शिक्षण पद्धति, शिक्षालय एवं शिक्षा के उद्देश्य में व्यापक परिवर्तन हुआ। पहला मुगल शासक बाबर (1526 से 1530) साहित्यिक अभिरूचि वाला व्यक्ति था और उसके पास फारसी, अरबी और तुर्की भाषा का ज्ञान प्राप्त था। उनकी आत्मकथा तुजुक–ए–बाबरी, उसके संस्मरण एवं साहित्यिक स्रोतों से इस बात की जानकारी प्राप्त होती है। उन्हें शिक्षा से विशेष प्रेम था और उसने कई शिक्षण संस्थाओं की मरम्मत करायी और उसमें अध्यापन कार्य प्रारम्भ कराया। बाबर ने अपने 4 वर्ष के शासन काल में भारतीय शिक्षा व्वस्था में सुधार हेतु प्रयास किया। बाबर ने अपने पुत्रों एवं अमीरो को भी शिक्षा के लिए प्रोत्साहित किया। बाबर ने एक विभाग शोहरत–ए–आम की स्थापना की जो शिक्षण संस्थाओं का वित्तपोषण करता था। बाबर द्वारा दिल्ली में स्थापित मदरसे में उच्चस्तरीय एवं आधुनिक शिक्षा का प्रमाण मिलता है जिसमें गणित, ज्योतिष, भूगोल जैसे विषयों की पढ़ाई होती थी लेकिन यह शिक्षा व्यवस्था भी धार्मिक प्रभाव से मुक्त नही थी। ख्वांदमीर, रब्बाफी जैसे विद्वान उसके दरबार को सुशोभित करते थे।

अध्ययन का उद्देश्य– प्रस्तुत अध्ययन का मुख्य उद्देश्य मुगल कालीन भारतीय शिक्षा की विवेचना एवं अध्ययन प्रस्तुत करना है जिसके आधार पर वर्तमान भारतीय शिक्षा से उसकी तुलना की जा सके।

विधि तंत्र– प्रस्तुत अध्ययन में विवेचनात्मक एवं विश्लेषणात्मक विधि तथ्यों का प्रयोग करते हुए अध्ययन को पूर्णता प्रदान की गयी है। अध्ययन हेतु शोध सामाग्री के लिए पत्र–पत्रिकाओं तथा स्थानीय राजकीय पुस्तकालय बलिया एवं महाविद्यालय पुस्तकालय में संपर्क किया गया।

विश्लेषण एवं व्याख्या– मुगल की शिक्षा पूर्णतया धर्म और संस्कृति पर आधारित शिक्षा थी जिसमें कला और संस्कृति को विशेष स्थान दिया गया। भारत में मुगल साम्राज्य का संस्थापक बाबर मूलतः चगताई तुर्क था जो मूलरूप से फरगना (वर्तमान अफगानिस्तान) निवासी था, जब मुगल मध्य एशिया से भारत आए तो अपने साथ वहाँ की संस्कृति, खान–पान, रहन–सहन, वेश–भूषा एवं शिक्षा पद्धति, जीवन पद्धति को लेकर आए। मुगल से पहले के आक्रांता लूट–पाट की भावना से प्रेरित थे और वे लूट–पाट कर वापस चले गए जबकि बाबर ने जब भारत मे मुगल साम्राज्य की स्थापना की तो उसने वहा की भाषा को भारत में राजकिय भाषा के रूप में स्थापित किया और शिक्षा पद्धति मे मध्य एशिया तथा भारतीय शिक्षा व्वस्था का सम्मिलन करते हुए एक नई शिक्षा पद्धति को लागू किया जो मूलतः धार्मिक प्रभाव को ग्रहण किए हुए था।

हुमायूं काल में शिक्षा– हुमायूँ बाबर का पुत्र था और अपने पिता की मृत्यु के उपरान्त गद्दी पर बैठा । हुमायू (1530–1556) अपने पिता की तरह महान विद्वान था। उसने भी शिक्षा व्यवस्था को संरक्षण प्रदान किया। गद्दी पर बैठने के बाद हुमायूं के समक्ष अनेक राजनीतिक मजबूरियाँ थी उसे अपने भाईयों के बीच साम्राज्यका विभाजन करना पड़ा

परन्तु इन कठिनाईयों के बावजूद उसने दिल्ली में एक मदरसा स्थापित किया और शेख हुसैन को उसका प्रधानाचार्य नियुक्त किया। इसके कार्यकाल में विद्वानों एवं संतो को व्यापक महत्व दिया गया। इसे पुस्तकें एकत्र करने का शौक था। हूमायूं के द्वारा दिल्ली दीनपनाह नामक एक लाईब्रेरी की स्थापना कि गई इसके अलावा हुमायूं के काल में माहम अनगा के प्रयास से दिल्ली में मदरसा–ए–बेगम की स्थापना हुई। हूमायूं ने यमुना नदी के दूसरी ओर एक मदरसा का निर्माण करवाया हूमायूं की पुत्री गुलवदन बेगम एक उच्च शिक्षित महिला थी जिसने हूमांयूनामा नामक पुस्तक की रचना की।

शेरशाह सूरी के शासन काल– इसने हुमायूं के निर्वासन काल में रहते हुए भारत पर शासन किया था। इसने नार नौल में एक मदरसा की स्थापना की जो शिक्षा का एक प्रमुख केन्द्र बन गया। शेरशाह सूरी पहला मुस्लिम शासक था जिसने सामान्य मुसलमानों की शिक्षा के लिए प्रावधान किया।

अकबर के शासन काल में शिक्षा– अकबर का शासनकाल लगभग पचास वर्षो (1556–1605 ई0) का रहा। अकबर के काल में शिक्षा मे तीव्र गति से प्रगति हुई। अकबर के शासनकाल में शिक्षा व्यवस्था में एक नया परिवर्तन दिखता है। अभी तक जो शिक्षा व्यवस्था पूर्ण रूप से धार्मिक प्रभाव को ग्रहण किए हुई थी उसमें उदारवादी तत्वों का समावेश प्रारंभ होता है। अकबर ने आम जनता की शिक्षा में बहुत अधिक रूचि दिखायी। यह कहना गलत नहीं होगा कि इसके शासन काल में भारत में शिक्षा के एक नये अध्याय की शुरूआत हुई। यद्यपि अकबर स्वयं ज्यादा पढ़ा लिखा नहीं था परन्तु इसने विद्वानों और शिक्षा में विशेष रूचि दिखायी।

अकबर के द्वारा मदरसो में फारसी अरबी अदि भाषाओं के साथ संस्कृत ग्रंथों का भी अध्यापन प्रारंभ करवाया। उसने संस्कृत की अनेक पुस्तकों का फारसी में अनुवाद करवाया। अकबर के शासनकाल में मदरसों में हिन्दु छात्र–छात्राओं का भी प्रवेश प्रारंभ हुआ। बदायूंनी के अनुसार अकबर ने गुजरात विजय के बाद अपने पुस्तकालय को अनेक दुर्लभ पुस्तकों से भर दिया।

इसके शासन काल के दौरान दर्शन, इतिहास, साहित्य और कला जैसे विषयों ने जबरदस्त प्रगति की। इस काल में शिक्षण हेतु अध्ययन के मौजूदा पाठ्यक्रम में बदलाव करते हुए तर्क, अंकगणित , खगोल विज्ञान, लेखा और कृषि आदि विषयों को अध्ययन में सम्मिलित किया गया। इस काल में शिक्षा को उदार बनाया गया। यहां तक कि हिन्दुओं को मुस्लिम मुक्ताब और मदरसों में भर्ती कराया गया। परिणाम स्वरूप कुछ हिन्दु विद्वानों ने फारसी सीखी और शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान प्रस्तुत किया। उस समय कुछ प्रमुख विद्वानों में माधव भट्ट, श्री भट्ट, बिशन नाथ, राम कृष्ण बलभद्र मिश्र, बासुदेव मिश्र, मान भट्ट विद्या निवास, गौरी नाथ, गोपीनाथ आदि प्रमुख थे।

अकबर के समय में कई संस्कृत की पुस्तकों का फारसी में अनुवाद किया गया। इसने आगरा, फतेहपुर सीकरी और अन्य स्थानों पर कई मकतबों और मदरसों की स्थापना की।

जहाँगीर के शासन काल में शिक्षा– जहाँगीर तुर्की और फारसी का ज्ञाता था, वह साहित्य और संस्कृति का प्रेमी था परन्तु इसने अपने शासन काल में शिक्षा के प्रसार पर व्यापक ध्यान नहीं दिया। इसने यह आदेश जारी किया था कि जब भी कोई अमीर व्यक्ति या यात्री बिना किसी वारिस के मर जाय तो उसकी सम्पत्ति राज्य द्वारा ले ली जाय और इससे होनेव वाली आय शिक्षण संस्थानों के निर्माण और रख रखाव पर खर्च की जाय। जहाँगीर के शासन काल में भी अनेक नये मदरसों का निर्माण करवाया गया और पुराने मदरसो की मरमत कराई गई।

शाहजहाँ के शासन काल में शिक्षा– शाहजहाँ एक शिक्षित व्यक्ति था और इसने विद्वानों और कला प्रेमियों को विशेष महत्व दिया था शिक्षा का प्रसार किया। इसने दिल्ली में जामा मस्जिद के पास एक मदरसा की स्थापना की। शाहजहाँ का पुत्र दाराशिकोह भी एक महान विद्वान था। इसे अरबी, फारसी और संस्कृत जैसी भाषाओं में महारत हासिल था।

शाहजहाँ ने दिल्ली के एक महाविद्यालय दारूल–बका की मरमत कराई। शाहजहाँ के काल में अनेक प्रमुख विद्वानों जैसे चंद्रभाण ब्राहमण, अबदुल हकीम, मुल्ला अहमद को संरक्षण प्रदान किया गया।

औरंगजेब के शासन काल में शिक्षा– अन्तिम मुगल शासक औरंगजेब ने अपने शासन काल में शिक्षा को रूढ़िवादी बना दिया। यह एक घोर मुस्लिमवादी शासक था और इसके शिक्षा में इसका समावेश किया। इसके अपने राजकोष का धन मुस्लिम शिक्षा के प्रचार और प्रसार में लगाया। इस प्रकार इसने अपने रूढ़िवाद को शिक्षा के क्षेत्र में विस्तारित करने की कोशिश की और हिन्दुओं और उनसे सम्बन्धित शिक्षा के केन्द्रों की घोर उपेक्षा किया जिसके कारण इसके शासन काल में हिन्दू धर्म उपेक्षा का शिकार हुआ। गोखले ने कहा कि औरंगजेब ने हिन्दू धर्म की अवमानना किया और मुस्लिम विद्वानों की उदारता से मदद किया। औरंगजेब की पुत्री जेबुन्निसा ने दिल्ली में बैतुल–उल–उलूम नामक एक विद्यालय की स्थापना की।

बाद के मुगल शासकों ने भी शिक्षा पर अधिक ध्यान दिया। बहादुर शाह प्रथम, मोहम्मद शाह, शाह आलम द्वितीय, बहादुर शाह जफर जैसे शासकों ने साहित्य, कला और संस्कृति के प्रोत्साहन हेतु कार्य किया।

मुगल काल के उत्तरार्द्व में अधिकांश मदरसे निजी प्रयासों द्वारा स्थापित किये गये थे। गाजी उद्दीन खान का मदरसा, शरफुद्दौला का मदरसा, और दिल्ली में रौशनुद्दौला का मदरसा, फरूखाबाद में हुसेनरजा खान का मदरसा विशेष उल्लेखनीय है जिसके माध्यम से शिक्षा दी जाती थी। अलग– अलग प्रकार के मदरसो में अलग–अलग प्रकार की शिक्षा दी जाती थी लखनऊ का फरहंगी महल मदरसा में न्याय तथा स्यालकोट के मदरसे में व्याकरण की शिक्ष दी जाती थी

निष्कर्ष–समग्र रूप से मुगल कालीन शिक्षा व्यवस्था का अवलोकन करने पर हम पाते है, कि प्रारंभिक शिक्षा केन्द्र के रूप में मकतब व्यवस्था थी वही उच्च शिक्षा मदरसो में दी जाती थी। शिक्षा व्यवस्था का प्रारंभ बिस्मिल्लाह रस्म से होता था और शिक्षा व्यवस्था के उपरान्त तीन प्रकार की उपाधियाँ प्रादान की जाती थी। तर्क और दर्शन के लिए फाजिल, धार्मिक शिक्षा के लिए आमिल और साहित्य के शिक्षार्थियों के काबिल उपाधि प्रादान की जाती थी।

मुगल कालीन शिक्षा के केन्द्र के रूप में मुख्यतः आगरा, फतेहपुर सीकरी, गुजरात, लाहौर, स्याल कोट, जौनपुर, अजमेर आदि प्रमुख केन्द्र थें मुख्य रूप से शिक्षण का माध्यम फारसी था लेकिन इस काल में संस्कृत हिन्दी और उर्दू भाषाओं का भी प्रयाप्त विकास हुआ।

मुगल शासन काल में शिक्षा व्यवस्था मुस्लिम धर्म के आसपास ही केन्द्रित रही। जिसके कारण अन्य धर्मों की कला और संस्कृति का विकास बाधित हुआ। मध्यकालीन शिक्षा प्रणाली में लचीलापन का अभाव था और यह बहुत अधिक कठोर और गैर रचनात्मक हो गयी थी। मुगल काल की शिक्षा के असफलता का मुख्य कारण यह था कि इसमें सटीक अवलोकन एवं व्यवहारिक निर्णय का अभाव था। शिक्षा की यह प्रणाली कठोर निष्फल और किताबों तक सीमित थी। इसलिये इस काल खण्ड में भारतीय शिक्षा का व्यापक विकास नहीं हो पाया। हिन्दुओं के सनातन धर्म ग्रन्थों पर आधारित शिक्षा की घोर उपेक्षा की गयी जिससे कि भारत की मूल शिक्षा में भी ह्रास हुआ। मुस्लिम शासन काल की शिक्षा रूढ़िवाद एवं धर्म के प्रचार एवं प्रसार पर आधारित थी जिसके कारण शिक्षा देने और लेने की यह विद्या लम्बे समय तक नहीं चल पायी और समकालीन शिक्षा की स्थिति अत्यन्त दयनीय होती गई। महिलाओं को अत्यन्त संकीर्ण दृष्टि से देखा जाता था तथा कुलीन घरानों को छोड़कर इनकी शिक्षा की कोई भी व्यवस्था इस काल में नहीं थी।

संदर्भ सूची

1. चौबे, झारखण्ड एवं कन्हैया लाल श्रीवास्तव, मध्य युगीन भारतीय समाज एवं संस्कृति, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान लखनऊ।
2. अहमद, लईक, मध्य कालीन भारतीय संस्कृति , शारदा पुस्तक भवन इलाहाबाद ।
3. सक्सेना, बी0पी, हिस्ट्री ऑफ शाहजहाँ ऑफ देहली।
4. एफ0ई0 कीय, ए हिस्ट्री ऑफ एजुकेशन इन इण्डिया एण्ड पाकिस्तान ।
5. रावत, पी0एल0, हिस्ट्री ऑफ इण्डियन एजुकेशन, आगरा, 1956
6- Syed Ali Nadeem Rezavi, The Organization of Education in Mughal India, Proceedings of the Indian History Congress, Vol. 68-Part-1, 2007, Pg. 389-397.
7- Faraz Anjum, Education and Learning in Mughal India: A Critical Study of Colonial Perception, Journal of the Research Society of Pakistan, Vol. 55 (1), 2018
8- Suyanta Sri and Ikhlas-Silfia, Islamic Education at Mughal Kingdom in India (1526-1857), Al-Talim Journal. Vol.23.
9- Hasani, S.M.A.A, Madrasah Education under Muslim rulers in India: A study of Mughal Emperor; Journal of advanced Education and Science, Vol, 02,(01),PP 13-18.